

ऋग्वेद

मण्डल ७

सूक्त ५४

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Rigveda

Maṇḍala 7

Sukta 54

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

वास्तु सूक्त का विषय एक रहने योग्य घर और उसके अन्दर होने वाले धर्मानुकूल आचरण है। इस सूक्त में वास्तोष्पति शब्द को दो अर्थों में लिया जा सकता है। पहले अर्थ में वास्तोष्पति परम पिता परमात्मा है जिससे हम प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें उत्तम घर प्रदान करे और उसमें रहते हुए हम धार्मिक आचरण की और प्रेरित रहें। दूसरे अर्थ में वास्तोष्पति स्वयं गृहस्थ है और उसके लिए कर्तव्य निर्धारित किए जा रहे हैं।

Synopsis

Vaastu sukta touches on the subject of qualities of an ideal home and kind of behavior a householder is supposed to engage in while residing there. The word vaastoṣhpati can have two meanings in this context. Vaastoṣhpati can be referred to as God himself, thereby this composition becomes a prayer to God for granting us a good home and for helping us in engaging in righteous behavior while residing there. In the second meaning vaastoṣhpati can mean the householder residing in the house, thereby making this composition a directive for choosing a good home and engaging in righteous behavior.

वशिष्ठः ऋषिः | वास्तोष्पतिः देवताः |

छन्दः		स्वरः	
१,३	निचृत्त्रिष्टुप्	१ – ३	धैवतः
२	विराट्त्रिष्टुप्		

vashiṣṭhaḥ ṛiṣiḥ. vaastoṣhpatiḥ Devataaḥ.

Chhandah		Swarah	
1,3	Nichrittriṣṭup	1 – 3	Dhaivataḥ
2	Viraattriṣṭup		

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥

वास्तोः पते प्रति जानीहि अस्मान् सुऽआवेशः अनमीवः भव नः ।
यत् त्वा ईमहे प्रति तत् नः जुषस्व शम् नः भव द्विऽपदे शम् चतुऽपदे ॥

हे (वास्तोः) गृह के (पते) रक्षक व स्वामी ! आप हमारी (प्रति) प्रार्थना (जानीहि) जानिए कि
यहाँ रहते हुए (अस्मान्) हमारे (सुऽआवेशः) विचार शुद्ध रहें, (नः) हम (अनमीवः) निरोगी (भव)
रहें (यत्) और (त्वा ईमहे) आपके (प्रति) प्रति (जुषस्व) प्रसन्नतापूर्वक सेवा का भाव रखें।
(तत्) यह घर (द्विऽपदे) मनुष्यों और (चतुऽपदे) पशुओं के लिए (शम्) शुभकारी (भव) हो।

1. Om vaastoṣh-pate prati jaaneehy
asmaan-sv-aavesho anameevo bhavaa naḥ
yat-tv-emahe prati tan-no juṣhasva
shan no bhava dvi-pade shañ chatuṣh-pade

O (pate) Protector of this (vaastoṣh) home! Please (jaaneehy) know our (prati) prayers that while residing (yat) here, may (asmaan) our (aavesho) thoughts remain (sv) beneficial and pure; may (naḥ) we (bhavaa) remain (anameevo) free from any diseases; and may (no) we (emahe) maintain a (juṣhasva) happily serving attitude (prati) towards (tv) you and your creation. May (tan) this home provide refuge and (bhava) be (shan) blissful to (dvi-pade) humans and (chatuṣh-pade) animals as well.

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व ॥२॥

वास्तोः पते प्रतरणः नः एधि गयस्फानः गोभिः अश्वेभिः इन्दो इति।
अजरासः ते सख्ये स्याम पिताऽव पुत्रान् प्रति नः जुषस्व ॥

हे (इन्दो) आनन्द देने वाले (वास्तोः) गृह के (पते) रक्षक व स्वामी! आप (नः) हमें (प्रतरणः)
दुःख से तारने के लिए (गोभिः) गौ (अश्वेभिः) अश्वों आदि से (गयस्फानः) घर की समृद्धि
(एधि) बढ़ाईयें। (ते) आपकी (सख्ये) मित्रता से हमारे (अजरासः) शरीर हृष्टपुष्ट (स्याम) रहें।
आप (पिताऽव) पिता की (प्रति) भांति (नः) हम (पुत्रान्) पुत्रों को (जुषस्व) सुख समृद्धि
दिजिए।

2. Om vaastoṣh-pate pratarāṇo na edhi
gayas-phaano gobhir-ashvebhir-indo
ajaraasas-te sakhye syaama
piteva putraan prati no juṣhasva

O (indo) Blissful (pate) Protector of (vaastoṣh) this home! In order to (pratarāṇo)
remove (na) our sorrows, (edhi) increase (gayas-phaano) the wealth of this home
in the form of (gobhir) cows and (ashvebhir) horses etc. With (te) your (sakhye)
friendship may our bodies always (syaama) be (ajaraasas) filled with vigor and
vitality. (prati) Like (piteva) a father provide (no) us, your (putraan) children,
(juṣhasva) happiness.

वास्तोष्पते शग्मया' संसदा' ते सक्षीमहि' रण्वया' गातुमत्या'।
पाहि क्षेम' उत योगे वरं' नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा' नः ॥३॥

वास्तोः पते शग्मया' सम्सदा' ते सक्षीमहि' रण्वया' गातुमत्या'।
पाहि क्षेमे' उत योगे वरम् नः यूयम् पात स्वस्तिभिः सदा' नः ॥

हे (वास्तोः) गृह के (पते) रक्षक व स्वामी ! जिस स्थल पर (ते) आपका (शग्मया) सुखरूप (रण्वया) प्राकृतिक सौन्दर्य (सम्सदा) स्थिर हो वहाँ पर हम (गातुमत्या) मधुर वाणी से आपका गुणगान करते हुए (सक्षीमहि) घर बनाए और प्रवेश करें। (उत) और आप की (पाहि) रक्षा में (नः) हम (क्षेमे) कुशल पूर्वक (वरम्) उत्तमता को (योगे) ग्रहण करें । (यूयम्) आप (स्वस्तिभिः) सुख आदि देते हुए (नः) हमारी (सदा) सदैव (पात) रक्षा करो ।

**3. Om vaastoṣh-pate shagmayaa sansadaa te
sakṣheemahi raṇvayaa gaatumatyaa
paahi kṣhema uta yoge varan no
yooyam paata svastibhiḥ sadaa naḥ**

O (pate) Protector of this (vaastoṣh) home! May we (sakṣheemahi) establish a home at a place which is (sansadaa) full of (te) your (shagmayaa) blissful (raṇvayaa) natural beauty and enter it while singing your praises in (gaatumatyaa) beautiful voices. (uta) And under your (paahi) protection (kṣhema) unharmed may (no) we (yoge) claim (varan) spiritual elevation. (yooyam) Please (sadaa) always (paata) protect (naḥ) us and grant us (svastibhiḥ) righteous happiness and pleasures.